2 तीमुथियुस की एक रूपरेखा

I. परीक्षाओं में स्थिर रहने की एक अपील (अध्याय 1)
   क. स्थिर रहने की ईश्वरीय प्रेरणा (1:1, 2)
   ख. स्थिर रहने के उदाहरण (1:3-7)
      1. हमारे पहले कौन गया है (1:3-5)
      2. जो कुछ हमें सौंपा गया है (1:6, 7)
   ग. स्थिर रहने की चुनौतियां (1:8-14)
      1. परीक्षाएं जो हमारे स्थिर रहने को डिगा सकती हैं (1:8)
      2. हमारे स्थिर रहने को सुनिश्चित करने के कारण (1:8-10)
      3. हमारे स्थिर रहने को मज़बूत बनाने का उदाहरण (1:11, 12)
      4. हमारे स्थिर रहने को उत्साहित करने का स्रोत (1:12)
      5. हमारे स्थिर रहने का सार प्रस्तुत करने की आज्ञा (1:13, 14)
   घ. स्थिर रहने से जुड़ी एक पसन्द (1:15-18)
      1. विश्वास से फिर जाने वाले अनुयायी (1:15)
      2. विश्वासी रहने वाला अनुयायी (1:16-18)
II. परमेश्वर के मापदण्ड को मानने की अपील (अध्याय 2)
   क. स्थिर रहने वाले मसीही का मापदण्ड (2:1-13)
      1. मापदण्ड का विवरण (2:1-8)
      2. मापदण्ड का उदाहरण रूप (2:9-13)
         क. पौलुस के कष्टों की अकड़नें और उनके कारण (2:9, 10)
         ख. छुटकारा दिलाने वाले की विश्वसनीयता (2:11-13)
   ख. मापदण्ड एवं शिक्षा की गलती (2:14-18)
      1. गलत बातें (2:14)
      2. सही ढंग (2:15)
      3. गलत संदेश (2:16-18)
   ग. मापदण्ड और मसीही व्यक्ति की जीवन शैली (2:19-26)
      1. हमारी जीवन शैली का स्रोत और सार (2:19)
      2. जीवन शैली के ढंग (2:20)
      3. हमारी जीवन शैली में सुधार करना (2:21-26)
      4. गलती करने वालों के साथ व्यवहार करने वालों के लिए दिशा निर्देश (2:25-26)
III. अंतिम दिनों में चौकस रहने की अपील (अध्याय 3)
   क. अपने आप को भ्रष्ट होने से बचा (3:1-9)

1. विस्तार में (3:1-5)
2. काम (3:6-9)

ख. अपनी चौकसी करने की सामर्थ (3:10-17)

1. पौलुस के आदर्श की सामर्थ (3:10-13)
2. अच्छी ट्रेनिंग की सामर्थ (3:14, 15)
   - क. आज्ञा (3:14क)
   - ख. आत्मविश्वास (3:14ख,15क)
   - ग. परिणाम (3:15ख)
3. पवित्र शास्त्र की सामर्थ (3:16, 17)
   - क. पवित्र शास्त्र परमेश्वर की ओर से दिया गया है (3:16क)
   - ख. पवित्र शास्त्र परमेश्वर की ओर से दान है (3:16ख)
   - ग. पवित्र शास्त्र का लक्ष्य (3:17)

IV. दौड़ पूरी करने की अपील (अध्याय 4)

क. मानने के लिए एक आज्ञा (4:1-8)

1. आज्ञा की उपयुक्तता (4:1)
2. आज्ञा में योजना और उसका ढंग (4:2)
3. आज्ञा से जुड़ी समस्या (4:3, 4)
4. सेवा को पूरा करने का नुस्खा (4:5)
5. आज्ञा से जुड़ा पौलुस द्वारा ठहराया गया नमूना (4:6-8)

ख. लोग और व्यक्तिगत बिनतियां (4:9-22)

1. लालसा किया गया साथ (4:9-13)
2. जीवन के संकटों के बीच आत्मविश्वास कायम (4:14-18)
3. अन्तिम टिप्पणियां (4:19-22)